Sl. 10, v. 1. पुत्रदाराध्यवश्यभक्तव्यपीउनेन यत् पार्-लौकिकधर्मबुद्धा दानादि करोति ॥ (Coullouca.)

Sl. 11, v. 1, b. चित्रियोद्धितमानस्य ॥ (Coullouca.)

Sl. 12, v. 2, b. बलन चौर्व्या वास्रेत् ॥ (Coull.)

SI. 13, v. 1. वैश्याद्ताभे मिति ॥ (Coullouca.)

SI. 14, v. 1, b. अयद्वा असोमयाती। = v. 2. वैश्या-दपरुर्णस्योक्तवाद्वाद्वाणाच वन्यमाणवादिदं नित्रिय-विषयं॥ (Råghavånanda.)

SI. 16, v. 2. दानादिधर्म्मर्हितादेकदिनपर्ध्याप्तं अर्घ चौर्ध्यादिना कृत्तेव्यं ॥ (Coullouca.)

Sl. 17, v. 2. किन्निमित्तं कृतिमिति पृच्छते निमित्तं चौर्धादेर्वक्तव्यं ॥ (Coullouca.)

Sl. 19, v. 2, b. = दुः वान्मोचयति ॥ (Coullouca.)

SI. 21, v. 1, a. तिस्मन्नुक्तिनिमत्ते चौर्ध्यवलात्कार् कुर्व्वाणे ॥ (Coullouca.)